बच्चों की शिक्षा में समुदाय की भागीदारी

राजश्री नायक

रोग के प्रसार के अतिरिक्त लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन पर भी कोविड-19 महामारी के दूरगामी असर हुए हैं। इस बीमारी की गम्भीरता के कारण शैक्षणिक संस्थाएँ बन्द हो गईं। यह शिक्षा के लिए एक अभूतपूर्व चुनौती रही। देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा से पहले ही मार्च के अन्त तक ज़्यादातर संस्थाओं व राज्यों ने काफ़ी तेज़ी दिखाते हुए शैक्षणिक गतिविधियों को रोक दिया था। लॉकडाउन हटने के बाद ज़्यादातर उच्च-शैक्षणिक संस्थाएँ ऑनलाइन शिक्षण करने लगीं। अधिकांश विद्यार्थियों ने इसके लिए आवश्यक सामग्री भी जुटा ली।

लेकिन यह बात प्राथमिक शिक्षा के बारे में सही नहीं है। ग्रामीण व शहरी भारत के कोने-कोने में स्थित प्राथमिक स्कूलों में विभिन्न आर्थिक व सामाजिक तबक़ों के विद्यार्थी आते हैं। अगर इन विद्यार्थियों को ऑनलाइन सुविधाओं से युक्त कर दिया जाए तो भी पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्कूलों के यह विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यम को संचालित करने के लिए अभी बहुत छोटे हैं। सरकारी और छोटे निजी संस्थानों दोनों के लिए प्राथमिक विद्यार्थियों का शिक्षण जारी रखना व शिक्षा के ऑनलाइन मोड सम्बन्धित प्रणालियों को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण रहा है।

विद्यार्थियों को स्कूलों से जोड़े रखने और दूरस्थ स्कूल या सामुदायिक कक्षा चलाने का विचार एक नई रणनीति थी। इसके बारे में हमने मई महीने में लॉकडाउन लगने के बाद सोचा। शिक्षण के अलावा स्कूल द्वारा विद्यार्थियों व उनके परिवारों को भावनात्मक सहयोग प्रदान करने की ज़रूरत थी। कुछ परिवारों को तो मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी मदद की ज़रूरत थी। जब शिक्षकों का समूह विद्यार्थियों से मिला और बातचीत की तो विद्यार्थियों ने ज़्यादा कुछ नहीं कहा। शिक्षकों के सवालों के जवाब भी नहीं दिए। यह स्पष्ट था कि विद्यार्थी व उनके अभिभावक, दोनों ही परेशान थे।

परिणामस्वरूप जब हमारी टीम में समुदाय स्तर पर कक्षाएँ चलाने के लिए चर्चा शुरू हुई तो लोगों में इस महामारी को लेकर काफ़ी ज़्यादा भय और भ्रम की स्थिति थी, किन्तु उत्साह भी था। प्रत्येक व्यक्ति के पास विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया से जोड़ने को लेकर किसी न किसी प्रकार की ज़िम्मेदारी थी। टीम ने ख़ुद को तीन अलग-अलग समूहों में बाँटा और गाँवों में जाकर स्थिति का जायज़ा लेने लगे। समुदाय (जिसने हमेशा से हमारी गतिविधियों में भाग लिया है) के साथ हमारे सम्बन्ध ने इस कार्य की सफलता के प्रति हमें आश्वस्त किया।

हमारे स्कूल की रूपरेखा

- हमारे स्कूल में, कक्षा एक से लेकर तीन में कुल 87 विद्यार्थी हैं जो 3-6 किलोमीटर के दायरे में बसे गाँवों से आते हैं।
- इनमें से आधे से अधिक विद्यार्थी रोज़ कमाने-खाने वाले परिवारों से हैं, एक तिहाई विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास सीमान्त ज़मीनें हैं। बहुत कम विद्यार्थी हैं जो सम्पन्न घरों से आते हैं। दो-तिहाई से थोड़े ज़्यादा परिवारों के पास स्मार्टफ़ोन हैं लेकिन बच्चों को इस्तेमाल करने के लिए नहीं मिलते। इसके कई कारण हैं : जैसे कि अभिभावकों का कक्षा के समय घर पर मौजूद न होना, ख़राब नेटवर्क या बच्चों का इन स्मार्टफ़ोन को चलाना नहीं आना। स्मार्टफ़ोन के ज़रिए प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को न्यूनतम एक घण्टे के लिए भी जोड़े रखना मुश्किल होता है और इसका उन पर मानसिक व शारीरिक दोनों तरह से बुरा असर पड़ सकता है। इन सभी कारणों से प्राथमिक स्कूलों के लिए ऑनलाइन शिक्षण अव्यावहारिक है।
- अभिभावक हमेशा से हमारे स्कूली क्रियाकलापों का एक हिस्सा रहे हैं। अतीत में उन्होंने जनपद गीत और अन्य स्थानीय गतिविधियों से जुड़ी कक्षाएँ आयोजित करने में भागीदारी की है ।
- स्कूल-समुदाय नेटवर्क (School-Community Network – SCN) समूह छह गाँवों का प्रतिनिधित्व करने वाले सामुदायिक सदस्यों का एक निकाय है। स्कूल टीम के सदस्य समस्याओं पर चर्चा करने और कार्यक्रमों, कक्षा उन्मुखीकरण और अभिभावक-शिक्षक बैठकों की व्यवस्था के बारे में निर्णय लेने के लिए लगातार बैठकें करते हैं।

स्थितिजन्य विश्लेषण

- शारीरिक दूरी बनाने, व्यक्तिगत स्वच्छता रखने और

मास्क पहनने को लेकर गाँव में बहुत कम जागरूकता पाई गई। बच्चे संक्रमण के ख़तरों से अनजान थे। गाँवों में ज़िन्दगी बिलकुल वैसी ही थी जैसी लॉकडाउन के पहले हुआ करती थी। खेलने के लिए बाहर न जा पाने के कारण बच्चे ख़ूब टीवी देखने लगे थे। हमने पाया कि बच्चों के साथ सार्थक जुड़ाव की आवश्यकता थी।

- कोविड-19 से जुड़ी कई सारी मनगढ़न्त बातों की वज़ह से बच्चे दूसरों से मिलने-जुलने से डर रहे थे। हैरानी की बात यह थी कि अभिभावक उन एहतियातों को बरतते नहीं देखे गए, जो वे चाहते थे कि उनके बच्चे बरतें ।
- अभिभावकों व समुदाय से बातचीत करके हमें यह पता चला कि लोग अपने बच्चों के भविष्य व शिक्षा के प्रति चिन्तित थे। हालाँकि अभिभावकों के साक्षरता स्तरों और पेशों में अन्तर के कारण वे स्कूलों के बन्द होने से बच्चों की वर्तमान शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर अधिक चिन्तित थे। यदि सही एहतियात के साथ विद्यालय खुले होते तो लगभग नब्बे प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल भेजते।

समुदाय के साथ सहयोग

हमने गाँव में सार्वजनिक स्थानों पर छोटी-छोटी बैठकें आयोजित कीं। इसमें हमने बच्चों की कक्षाएँ संचालित करने के तरीक़ों को लेकर अभिभावकों के साथ विचार-विमर्श के छोटे-छोटे सत्र लिए। अभिभावकों ने बच्चों के लिए होमवर्क, विद्यालय परिसर में हर दूसरे दिन छोटे समूहों में कक्षा आदि जैसे कुछ सुझाव दिए। जब हमने उनके गाँवों में ही कक्षा संचालित करने का सुझाव दिया तो वह सब बिना किसी हिचकिचाहट के तुरन्त तैयार हो गए। अभिभावकों ने बिना किसी देरी के विद्यालय खोलने का आग्रह किया और कहने लगे कि “बच्चे हमारी बात नहीं मानते, लेकिन वे आपकी बात ज़रूर मानेंगे।” उनकी त्वरित प्रतिक्रिया व हमारी मदद करने की उनकी इच्छा को देखकर हम चकित-से रह गए। उनके द्वारा उठाए गए कुछ कदम यहाँ बताए गए हैं :

स्कूल परिसर

हमारे स्कूल के 85 बच्चे पाँच गाँवों में रहते हैं और केवल दो ही बच्चे छठे गाँव से आते हैं। अत: प्रत्येक गाँव में बच्चों को दो समूहों में बाँटा गया। प्रत्येक समूह में अधिकतम दस बच्चे थे। समूह में बच्चों की संख्या के अनुसार कक्षा के लिए कमरे तय किए गए। पहले चरण में, अभिभावकों द्वारा कक्षाओं के लिए 8 कमरों का इन्तज़ाम किया गया जिनमें समुदाय भवन, समाज कोने, आँगनवाड़ी केन्द्र, अम्बेडकर हॉल आदि शामिल थे। इसके साथ ही दो केन्द्र मन्दिर परिसरों में बनाए गए। हालाँकि दो कक्षाओं के बाद शिक्षकों व अभिभावकों को लगा कि ऐसे खुले स्थानों पर, जहाँ और भी कक्षाएँ चल रही हों, शोर बहुत ज़्यादा होता है। अत: किराए के कमरों का इन्तज़ाम किया गया। शिक्षक बाक़ी के दो विद्यार्थियों के होमवर्क व अन्य कार्यों के निरीक्षण के लिए हफ़्ते में एक दिन भीमल्ली (छठे गाँव) जाते थे।

स्वयंसेवी शिक्षक

हुंसीहादगिल गाँव में समुदाय के लोग बच्चों के पढ़ने व लिखने की आदत छूटने से इतने चिन्तित थे कि उन्होंने अन्य शिक्षकों द्वारा दिए गए कार्यों अनुवर्तन (follow up) के लिए समुदाय से एक शिक्षक को नियुक्त किया। उन्होंने बच्चों की शिक्षा को चालू रखने के लिए शिक्षकों को भुगतान करने की पेशकश भी की। हालाँकि अभिभावकों की माली हालत को देखते हुए स्कूल टीम ने उन्हें विश्वास दिलाया कि इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

संवाद

बच्चों को कक्षा का समय बताने/याद दिलाने और उनकी पूरी उपस्थिति सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी अभिभावकों ने उठा ली। उन्होंने सुविधाओं की उपलब्धता का ध्यान रखा और यह भी सुनिश्चित किया कि सुरक्षा के लिए ज़रूरी एहतियातों का पालन किया जा रहा है। अभिभावकों और सहायक कर्मचारियों ने स्वेच्छा से ‘कक्षाओं’ को सैनिटाइज़ भी किया और हफ़्ते में दो बार पूरे परिसर की सफ़ाई की।

अनुवर्तन करना

अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों व शिक्षकों दोनों की अनुपस्थिति का ध्यान रखा जाता था। कोविड-19 जैसी परिस्थिति में यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। क्योंकि गाँवों में पॉज़िटिव मरीज़ मिलने का मतलब था दो हफ़्तों के क्वारंटाइन पीरियड के लिए कक्षाओं को रोकना। जिन गाँवों में कोविड के पॉज़िटिव मरीज़ होते वहाँ हम किसी एक अभिभावक को वर्कशीट्स (जिन पर विद्यार्थियों का नाम लिखा होता था) दे देते जो उन्हें बच्चों में बाँटकर हमारी मदद करते।

कुछ परिणाम

अभी तक टीम द्वारा जून और जुलाई माह में हर केन्द्र पर बच्चों के लिए छह कक्षाएँ लगाई गईं। अगस्त माह से प्रत्येक केन्द्र पर लगातार चार दिन कक्षाएँ ली जा रही हैं। स्कूलों के वापिस खुलने तक यही कार्यक्रम जारी रहेगा।

हमारे प्रयासों से रोज़ाना होने वाली विभिन्न गतिविधियों में लगभग 96 प्रतिशत उपस्थिति देखने को मिली। इन प्रक्रियाओं को और व्यवस्थित करने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें साप्ताहिक समीक्षा भी शामिल हैं। लॉकडाउन के दौरान बच्चे अक्षर, उनकी ध्वनियाँ, पढ़ने-लिखने के कौशल भूल-से गए

थे। शिक्षकों द्वारा उन्हें पुन: सिखाने का प्रयास किया जा रहा है।

अधिगम परिणाम

शिक्षकों के प्रयासों के फलस्वरूप प्राप्त कुछ सकारात्मक परिणाम इस प्रकार हैं :

- कोविड-19 के बारे में जागरूकता पैदा हुई और बच्चों की सुरक्षा में मदद मिली।
- सुनकर समझने और शब्दों व उनकी ध्वनियों के बीच के सम्बन्ध को समझने के कौशल में बढ़ोतरी हुई।
- अँग्रेज़ी और कन्नड़ दोनों ही भाषाओं में पढ़ने और लिखने के बुनियादी कौशलों में बढ़ोतरी हुई।
- स्थानिक कौशल (spatial skills) विकसित हुए।
- काग़ज़ को मोड़कर, बिन्दुओं वाली जाली पर काग़ज़ को काटकर, सीधी रेखाओं आदि को इस्तेमाल करके द्विविमीय आकृतियों को बनाने व पहचानने की क्षमता विकसित हुई।
- गणित की मूलभूत संक्रियाएँ सीखीं।

समुदाय के सहयोग पर अन्तर्दृष्टियाँ

एक सामाजिक संस्था होने के नाते, स्कूली प्रणाली में समुदाय के सदस्यों की पूर्णत: भागीदारी को प्राप्त करना स्कूल की एक प्रमुख ज़िम्मेदारी है। स्कूल-समुदाय नेटवर्क (SCN) या विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति (SDMC) को स्थापित करने को भी शिक्षण जितनी ही प्राथमिकता देना ज़रूरी है।

साझा समझ

स्कूल और समुदाय के सदस्यों के बीच साझेदारी से स्कूल का विकास होता है। अपने आस-पास के स्कूलों का एक छोटा-सा अवलोकन ही यह समझने में मदद कर सकता है कि स्कूल-समुदाय नेटवर्क कितना महत्त्वपूर्ण है और जब दोनों एंजेसी सहयोगियों के रूप में एक साथ कार्य करती हैं तो स्कूल में किस-किस तरह के बदलाव हो सकते हैं। लेकिन यह तभी सम्भव होगा जब स्कूल अभिभावकों को अपना हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करें। अभिभावकों की भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षक समय-समय पर अभिभावकों को स्कूल बुलाएँ, उन्हें स्कूल के कार्यकलापों से परिचित कराएँ, उन्हें अपने बच्चों की पढ़ाई के बारे में अवगत कराएँ और उन्हें दिखाएँ कि कैसे वे शिक्षकों की मदद कर सकते हैं। अभिभावक का सम्मान करना इस पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।

निष्कर्ष

टीम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करने में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ रही है और बच्चों को भी बदलावों के साथ तालमेल बिठाने में समय लग रहा है, पर वह कोशिश कर रहे हैं। शिक्षक भी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं क्योंकि इस पद्धति की अपनी सीमाएँ हैं और यह वास्तविक कक्षा के अनुभव की तरह नहीं है। उदाहरण के लिए, बच्चों के काम को प्रदर्शित करना या सीमित स्थानों पर शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) का उपयोग करना मुश्किल होता है। शारीरिक दूरी के नियमों के साथ गतिविधियों का संचालन असम्भव है और कोविड-19 संक्रमण के बढ़ते मामलों के साथ-साथ लक्षणरहित संक्रमित लोगों की संख्या में वृद्धि डर का माहौल पैदा कर रही है। विद्यार्थियों को भी शिक्षकों से खुलने में पहले से ज़्यादा समय लग रहा है। यदि यह स्थितियाँ लम्बे समय तक बनी रहीं तो विद्यार्थियों के सीखने और शिक्षकों के साथ उनके सम्बन्धों पर काफ़ी प्रभाव पड़ेगा। हालाँकि यदि स्थितियाँ ऐसी ही रहती हैं, तो विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए यही एकमात्र विकल्प हो सकता है।



राजश्री नायक पिछले आठ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ हैं और वर्तमान में कलबुर्गी के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में समन्वयक हैं। उन्होंने स्कूल ऑफ़ सोशल वर्क, रोशनी निलय, मैंगलोर से सोशल वर्क में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है। वह एक कैम्पस एसोसिएट के रूप में फ़ाउण्डेशन में शामिल हुईं और महिला साक्षरता कार्यक्रम, जो स्कूल छोड़ने वाले बच्चों और उनकी माताओं के साथ कार्य करता था, की समन्वयक थीं। उनसे **rajashri.nayak@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी